पू. कैलाश जी 'मानव'

वर्ष:15 | अंक:175 | जुलाई, 2026

मूल्य: ₹5

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

सेवा पाती

चांदनी के चेहरे पर लौटी चमक

जीवन में कठिनाइयाँ चाहे कितनी भी हों आगे बढ़ने से रोक नहीं सकती–चांदनी

बदलती तस्वीर

कृत्रिम अंग से बदल रही है हजारों जिन्दगियाँ

सेवा की मिसाल

संस्थान बना रहा है आत्मनिर्भरता की नई पहचान

हर कदम में नई उम्मीद

नारायण सेवा संस्थान के साथ, दिव्यांगजनों को दें नया जीवन और आत्मविश्वास

रूके कदमों की बहाली
उच्च गुणवत्ता वाले कृत्रिम अंगों के माध्यम से।

आत्मविश्वास की वापसी
हर कदम के साथ नया हौसला और सम्मान।

उम्मीद की नई शुरुआत
आपका सहयोग किसी को फिर से अपने पैरों पर खड़ा कर सकता है।

किसी दिव्यांग को दें खुला आसमान

NARAYAN LIMBS & CALIPERS
can transform lives

आज ही सहयोग करें

Donate via UPI

कृत्रिम अंग सहयोग

10,000/-

narayanseva@sbi

www.narayanseva.org
0294-6622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Since 1985

Nar Seva Narayan Seva

1-2, वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी, माली कॉलोनी, उदयपुर (राजस्थान) 313002, भारत

फोन नं. +91-294-6622222 वाट्सएप: +91-7023509999

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

अनुक्रमणिका

इस महिने में .....

मूल्य ▸ 5   वर्ष ▸ 15   अंक ▸ 175

मुद्रण तारीख ▸ 1 जुलाई, 2026   कुल पृष्ठ ▸ 32

06 संस्कारों की पाठशाला संयुक्त परिवार

08 चांदनी के चेहरे पर लौटी चमक

10 छलक उठीं माँ-पिता की आखें

12 46वां नि:शुल्क सामूहिक विवाह

16 वर्षों बाद सपना साकार

18 दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह-निमंत्रण

20 मुम्बई में दिव्यांग सहायता शिविर

22 आत्मबल से सफलता: भैया जी

24 गुरूपूर्णिमा: गुरू की कृपा

26 जिला कलेक्टर ने देखी नारायण सेवा

27 नि:स्वार्थ सेवा का नयनाभिराम संसार

सम्पादक मंडल

मार्गदर्शक ▸ कैलाश चन्द्र अग्रवाल

सम्पादक ▸ प्रशान्त अग्रवाल । सहयोग ▸ विष्णु शर्मा हितैषी

भगवान प्रसाद गौड़ । डिजाइनर ▸ विरेन्द्र सिंह राठौड़

सेवा–पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 जुलाई, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538, स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली–110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित। मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये

इच्छा शक्ति ही ईश्वर शक्ति

– सेवक प्रशांत भैया

कठिनाइयां और असफलताएं उस व्यक्ति को नष्ट कर देती हैं, जिसमें उनसे मुकाबला करने की इच्छा शक्ति नहीं है। चुनौतियां ही हमें अपनी बेहतरी का अवसर देती हैं, और इच्छाशक्ति ही उसे सफलता के रूप बदलती है। जो कोई इच्छाशक्ति को विकसित करना चाहे, उसके लिए सुसंगति में जरूरी हैं।

जब कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो यह समय हमारी आंतरिक शक्तियों को बाहर लाने का होता है। इसके लिए इच्छाशक्ति आवश्यक है। यह व्यक्ति को उसके 'मैं' से परे ले जाकर असली उद्देश्य का पहचान कराती है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो मानते हैं कि परिस्थितियों को बदलने में इच्छाशक्ति का प्रयोग प्रकृति (ईश्वर) की योजना में हस्तक्षेप है। वे तब स्वत: बदल जाएगी, तब ईश्वर चाहेंगे। लेकिन उन्हें यह बात समझनी होगी कि यदि इच्छाशक्ति का हालात को बदलने में प्रयोग न करना होता तो ईश्वर हमें यह शक्ति देता ही क्यों? ऐसी नकारात्मक भावनाओं से बाहर निकलने की जरूरत है। मानवीय इच्छाशक्ति के पीछे ईश्वर की ही शक्ति होती है। हम बोलते हैं, खड़े होते हैं, भोजन या पर्यटन के लिए, यहां तक कि सोने के लिए भी इच्छाशक्ति का ही उपयोग करते हैं। यदि हम किसी योजना पर सोच–विचार कर रहे होते हैं, तो उसे कार्यरूप में परिणत करने के लिए इच्छाशक्ति की ही आवश्यकता होगी। उसके बिना आप और हम यंत्रवत् रहेंगे। जिस परिणाम के लिए हम प्रार्थना करते हैं, वह भी बिना इच्छाशक्ति के प्राप्त नहीं हो सकता। यह हमें अपने भीतर की नकारात्मकताओं को जलाने और असली प्रतिभा को सामने लाने का अवसर देती है। जीवन के उतार–चढ़ाव यह सिखाते हैं कि कभी न हारें, क्योंकि हर चुनौती से हम और मजबूत बनते हैं। एक सकारात्मक सोच अर्थात इच्छाशक्ति ही आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करती है। प्रतिकूल हालात का यदि सामना नहीं करेंगे तो वे हमारे भीतर एक अवचेतन जख्म के रूप में बने रहेंगे और हमारे सर्वांग विकास में रूकावट बनेंगे। जीवन में सुख और दुख दोनों ही अनिवार्य हैं और दोनों ही हमें कुछ न कुछ सिखाते हैं। सुख में हम आभार और खुशी का अनुभव करते हैं, जब कि दु:ख में अपनी ताकत और शक्ति की पहचान करते हैं। अतएव कभी भी निराश अथवा हतोत्साहित होने की आवश्यकता नहीं है। सचेत रहने के लिए इच्छाशक्ति का उपयोग जरूरी है। हर एक के जीवन में बाधाएं आती हैं। वे काल्पनिक नहीं हैं, परन्तु उतनी जटिल भी नहीं, जितनी वे दिखती हैं। इच्छाशक्ति यदि है तो आप दृढ़ता से कह सकते हैं कि –'यह हल होकर रहेगी।' अर्थात आप वो सब कुछ कर सकते हैं, जो चाहते हैं। यही सोच और शक्ति आपेक भीतर के सारे तनाव को बाहर निकाल फेंकेगी और आप पूरे विश्वास के साथ उस पर अपनी जीत की मोहर लगा देंगे। मुश्किल सिर्फ संकुचित मानसिकता है। जिससे ऊपर उठने का प्रयास करें।

सनातन संस्कृति
वसुधैव कुटुम्बकम

–पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव'

प्रत्येक भारतीय के मन और अवचेतन में एक वाक्य हर क्षण प्रतिध्वनित होता रहता है– वह है 'वसुधैव कुटुम्बकम'। इसके अर्थ के अनुसार हम पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणियों को एक परिवार के रूप में देखते और मानते हैं। यह धारणा विश्व के कल्याण की भावना से महिमा मंडित है। हमारे वेद भी इसकी पुष्टि करते हैं। यजुर्वेद का एक मंत्र है– 'यत्र विश्व भवत्येकनीडम' अर्थात यह संसार एक घोंसले जैसा है, जहां अलग–अलग स्वभाव तथा विभिन्न प्रकृति के लोग एक स्नेह तंतु से बंधे रहते हैं। वेदों की इसी उदार भावना ने 'एक विश्व' की अवधारणा को जन्म दिया।

वसु–धा– कुटुम्बकम तीन शब्दों से बना वाक्य है। वसु अर्थात धन, 'धा' अर्थात धारण करने वाली। इस प्रकार रत्नादि आदि अनेक धन–सम्पत्तियों को धारण करने वाली पृथ्वी ही वसुधा है और उसकी सम्पत्ति का उपभोग करने वाले प्राणी उसकी सन्तान है। वसुधा एक मां की तरह अपनी ममता सब पर न्यौछावर करती है, सबका पालन–पोषण करती है। वसुधा के साथ 'एव' शब्द भी जुड़ा है। संस्कृत के इस शब्द का अर्थ 'ही' है। कुल मिलाकर वसुधा+एव =वसुधैव अर्थात वसुधा ही कुटुम्ब (परिवार) है।

आज परिवार टूट रहे हैं, समाज में दूरियां बढ़ रही हैं, राज्यों के बीच विवाद हैं और दुनिया जंग के मुहाने पर खड़ी है। इसके मूल में सामूहिकता का तिरोहित होना और व्यक्तिनिष्ठ स्वार्थो का हावी होना है। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना यहीं जख्मी होकर मनुष्य के लिए दुःख का कारण बन रही है। निजी स्वार्थ, ईर्ष्या और द्वेष से हटकर जब हम सामूहिक हितों पर विचार करेंगे, तो पाएंगे कि यही वह मार्ग है–जहां प्रेम, सहयोग, सद्भाव और समृद्धि से मिलना संभव है। यदि हम एक दूसरे के सुख–दुःख में भागीदार बनने की इच्छा–आकांक्षा के विचार से अपने कर्तव्य पथ पर बढ़ेंगे, तो वही असीम सुख देने वाला होगा।

अन्यथा जीवन अंशाति, अभाव और समस्याओं से घिर जाएगा। कम से कम परिवार व कुटुम्ब में रिश्ते निभाना ही सीख लें तो यह अपने आप में एक बड़ी योग्यता अर्जित करने जैसा होगा। आज सम्पूर्ण मानवता अपने स्वार्थ, लोभ और ईर्ष्या रूपी रोगों से आक्रांत है। ऐसे में अविलम्ब ऐसी दवा की जरूरत है, जो क्रोध को करूणा में, द्वेष को प्रेम में व स्वार्थ को उदारता में बदल दे। इसका एक मात्र उपाय परस्पर विश्वास, सद्भाव व सामूहिक हित चिंतन है। यदि विचारों में परिवर्तन हो तो, समाज, राज्य, राष्ट्र और विश्व में स्वतः परिवर्तन आ जाएगा।

संस्कारों की पाठशाला संयुक्त परिवार

भारतीय संस्कृति केवल प्राचीन परंपराओं का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक ऐसी पद्धति है जो मनुष्य को स्वयं से, परिवार से, समाज से, प्रकृति से और परमात्मा से जोड़ती है। यही कारण है कि हजारों वर्षों के उतार–चढ़ाव, आक्रमणों और परिवर्तन के बाद भी भारतीय संस्कृति आज विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार 'वसुधैव कुटुम्बकम' है। अर्थात् यह संपूर्ण पृथ्वी को अपना परिवार मानने की शिक्षा देती है। यहाँ धर्म का अर्थ केवल पूजा–पद्धति नहीं, बल्कि सत्य, करुणा, सेवा, संयम और कर्तव्य का पालन है। भारत की संस्कृति का सबसे बड़ा बल परिवार है। संयुक्त परिवार की परंपरा ने केवल लोगों को एक छत के नीचे नहीं रखा, बल्कि संस्कारों की ऐसी पाठशाला बनाई जहाँ बच्चे बड़ों का सम्मान, त्याग, सहयोग और प्रेम सहज ही सीख जाते थे। हमारे यहां प्रकृति भी पूजनीय है। नदियों को माँ, पृथ्वी को धरा माता, वृक्षों को देवतुल्य और पशु–पक्षियों को जीवन का साथी माना गया। यह भावना केवल आस्था नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का वैज्ञानिक संदेश भी है। आज जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन से चिंतित है, तब भारतीय जीवन–दृष्टि पहले से ही प्रकृति के साथ संतुलित जीवन का मार्ग दिखाती है।

भारतीय संस्कृति केवल प्राचीन परम्पराओं का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक सार्थक पद्धति है परिवार ही संस्कृति की पहली पाठशाला है और संयुक्त परिवार उसकी सबसे सुन्दर रचना।

हमारे पर्व और त्योहार भी केवल उत्सव नहीं, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम हैं। दीपावली प्रकाश का, होली प्रेम और सद्भाव का, रक्षाबंधन विश्वास का और गुरु पूर्णिमा ज्ञान के प्रति श्रद्धा का संदेश देती है। वर्तमान में विज्ञान और तकनीक ने जीवन को गति दी है, लेकिन यदि प्रगति के साथ संस्कृति पीछे छूट जाए तो विकास अधूरा रह जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आधुनिकता को अपनाएँ, पर अपनी जड़ों को न भूलें। डिजिटल बनना समय की मांग है, लेकिन परिवार के साथ संवाद और बड़ों के प्रति आदर भी हमारी पहचान बने रहना चाहिए। भारतीय संस्कृति हमें अधिकारों से पहले कर्तव्यों का बोध कराती है। यह सिखाती है कि जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं के लिए जीना नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी उपयोगी बनना है। यहां सेवा, दान, करुणा और विनम्रता जैसे गुण आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने सदियों पहले थे।

आत्मशुद्धि का सुअवसर चातुर्मास

चातुर्मास आत्म और संस्कार शुद्धि का सुअवसर है। यह खान–पान व चाल–चलन में विवेक बरतने का पर्व है। जैन, वैदिक व बौद्ध सभी परंपराओं में चातुर्मास का विधान है। जैन परंपरा में आषाढ़ी पूनम से कार्तिक पूनम तक चार महीने पैदल विहार करने वाले जैन श्रमण एक ही स्थान पर निवास करते हैं। वैदिक संत–महात्मा भी वर्षाकाल में चातुर्मास प्रवास करते हैं। वर्षावास में वर्षा ऋतु के दो माह श्रावण–भाद्रपद के महीने आते हैं। वैदिक ग्रंथों में ऋषि वशिष्ठ लिखते हैं– चातुर्मास के चार महीने भगवान विष्णु क्षीर सागर में शयन करते हैं, इसलिए इस दौरान व्यक्ति को अपना समय योग, ध्यान, धर्म श्रवण, जप, तप में बिताना चाहिए। आठ महीने तक लगातार विहार करने वाले साधु के लिए चातुर्मास एक प्रकार से रात्रि के विश्राम की तरह है।

शयन का अर्थ है कि हमारी प्रवृत्तियां सीमित हो जाएं। सोना निवृत्ति का सूचक है और जागना प्रवृत्ति का। चातुर्मास का पर्व यही प्रेरणा देता है कि हमारा पुरुषार्थ अंतर्मुखी हो जाए। हम भले ही बाहर से सो जाएं, पर भीतर से जागते रहें। वर्षा के कारण पृथ्वी पर अगणित, असंख्य, अनंत जीवों की उत्पत्ति होती है। ऐसे सूक्ष्म जीव, जो आंखों से दिखाई नहीं देते। उन जीवों की रक्षा के लिए श्रमण एक स्थान पर ठहरते हैं।

चातुर्मास एक आत्म अवलोकन का अवसर भी है। परोपकार का अवसर है। बुद्धिमान वही है, जो अवसर को पहचान लेता है और लाभ उठाता है। चातुर्मास के इस काल में आध्यात्मिक लाभ उठाने के लिए अपनी मनोभूमि तैयार कीजिए। चिंतन, मनन, उपदेश–श्रवण तथा श्रद्धा–विश्वास को जीवन में उतारें। वर्षाकाल में जीवों की विराधना से बचने के लिए यातायात, प्रवास को सीमित करें। चलने और खाने–पीने में विवेक रखें। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि की अग्नि को शांत करने का प्रयास करें।

एक महत्वपूर्ण त्योहार पर्युषण पर्व की आराधना भी इसी दौरान होती है.. पर्युषण के दिनों में जैन समुदाय की गतिविधि विशेष रहती है तथा जो जैन धर्मावलम्बी वर्ष भर या पूरे चार माह तक कतिपय कारणों से जैन दर्शन में ज्यादा समय नहीं प्रदान कर पाते वे पर्युषण के इन 8 दिनों में अवश्य ही रात्रि भोजन का त्याग, ब्रम्हचर्य, स्वाध्याय, जप –तप मांगलिक प्रवचनों का लाभ तथा साधु–संतों की सेवा में संलिप्त रह कर जीवन सफल करने की मंगल भावना. दर्शाते हैं। आत्मकल्याण के इस सुअवसर का भरपूर लाभ उठाएं।

चातुर्मास का सही मूल्यांकन श्रावकों और श्राविकाओं के द्वारा लिए गए स्थायी संकल्पों एवं व्रत प्रत्याखानों से होता है। यह समय आध्यात्मिक क्षेत्र में लगातार नई ऊँचाइयों को छूने हेतु प्रेरित करने के लिए है, अध्यात्म जीवन विकास की वह पगडंडी है जिस पर अग्रसर होकर हम अपने आत्मस्वरूप को पहचानने की चेष्टा कर सकते हैं।

चांदनी के चेहरे पर लौटी चमक

उत्तर प्रदेश के बहराइच की हंसती–हंसाती बारह वर्ष की चांदनी का जीवन एक दर्दनाक हादसे ने पूरी तरह बदल दिया। वह अपने चाचा के साथ नाना के घर जा रही थीं। **ट्रेन में चढ़ते समय अचानक गिर पड़ी, इससे पहले कि वह संभलती ट्रेन चल पड़ी। इस भीषण हादसे में चांदनी ने घुटनों तक दोनों पैर खो दिए। लेकिन हौसला नहीं खोया।**

हर दम चहचहाने वाली यह चिड़िया पलक झपकते बेसुध हो गई। अस्पताल में इलाज से जख्म ठीक हो गए परन्तु आगे बढ़ने के रास्ते बंद हो गए। घिसटकर बढ़ना और बिना किसी सहारे के अपना कोई काम भी नहीं कर पाना उसकी नियति बन गया।

घटना के बाद चौदह साल घर में ही बैठे बिताए और दूसरों को चलते–फिरते देख आंखें बार– बार गीली हो जाती थीं। चांदनी कहती हैं, "जब मैं लोगों को अपने पैरों पर चलते देखती थी, तो मन में आता था कि काश मैं भी चल पाती।"

अब 26 वर्ष की हो चुकी चांदनी के परिवार को एक माह पहले नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली। उम्मीद की किरण संजोये माता–पिता उन्हें संस्थान लेकर आए। यहां विशेषज्ञों ने जापानी एवं जर्मन तकनीक से निर्मित 3–डी प्रिंटेड 'नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब' के लिए उनका माप लिया और उन्हें कृत्रिम पैर लगाए। कुछ दिन संस्थान में ही उन्हें लिंब पहनकर चलने–फिरने का प्रशिक्षण दिया गया।

चांदनी फिर से अपने दोनों पैरों पर खड़े होकर खुश हैं। वह आत्मविश्वास के साथ चलती और हंसी–खुशी बतियाती हैं, अपने अधिकांश काम स्वयं करते हुए नए जीवन की ओर बढ़ रही हैं। **उनके चेहरे की मुस्कान इस बात का प्रमाण है कि सही अवसर और सहयोग मिलने पर कठिनाई चाहे कितनी बड़ी हो जीवन में आगे बढ़ने की राह नहीं रोक सकती।**

सपनों को हकीकत में बुन रही कुसुम

आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की कुसुम संस्थान की नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रही है। परिवार की सीमित आय के कारण उनके माता–पिता के लिए बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठाना आसान नहीं था। कई बार ऐसा लगता था कि आर्थिक तंगी के कारण कुसुम का स्कूल जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सपना अधूरा ही रह जाएगा। इस समय वह पांचवी कक्षा की छात्रा है। कुसुम मुस्कुराते हुए कहती है, पारिवारिक हालात को देखते हुए मैंने सोचा भी नहीं था कि कभी स्कूल जा पाऊंगी। लेकिन भगवान नारायण ने उसका यह सपना नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से साकार कर दिया है। आज वह हर दिन खुशी और उत्साह के साथ विद्यालय आती है। उसे लिखना–पढ़ना बहुत पसंद है, वह मन लगाकर शिक्षा प्राप्त कर रही है। पढ़ाई के साथ–साथ वह कंप्यूटर भी सीख रही है, जिससे भविष्य में उसे डिजिटल परिवेश में नई उड़ान मिल सके। वह अपने शिक्षकों से कहती ही रहती है कि पढ़–लिखकर जीवन को सार्थक करना चाहती हूं। परिवार के हालात बदलना चाहती हूं।

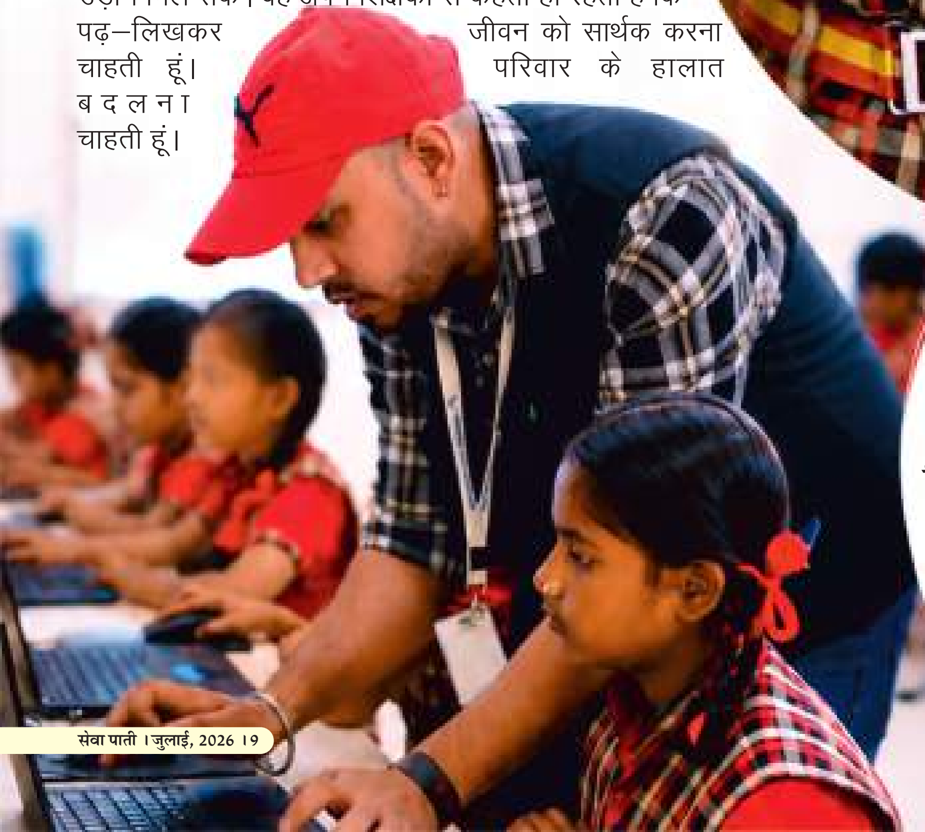

वह मानती है कि यह अवसर उसे संस्थान और उसके दानदाताओं के सहयोग से मिला है। उनके जैसे जरूरतमंद बच्चों के जीवन में शिक्षा की नई रोशनी लाने के लिए मैं सभी दानवीर भामाशाहों का दिल से धन्यवाद करती हूं। आपके सहयोग ने हमें केवल शिक्षा ही नहीं, बल्कि बेहतर भविष्य का सपना देखने और उसे पूरा करने का हौसला भी दिया है।

दिव्यांग बेटे को चलता देख छलक उठीं माता-पिता की आंखें

मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के देवरी गांव के किसान ''निर्भय सिंह'' और ''सुगन कुंवर'' के पुत्र ''तोफान सिंह (33)'' बचपन में बुखार के इलाज के दौरान लगाए गए इंजेक्शन के दुष्प्रभाव से दिव्यांग हो गए। उनके बाएं पैर में विकृति आ गई, जिससे चलना–फिरना मुश्किल हो गया। आर्थिक तंगी के बावजूद माता–पिता ने बेटे की पढ़ाई नहीं रुकने दी। बैसाखी के सहारे तोफान ने स्नातक तक की शिक्षा पूरी की।

वर्ष 2007 में टेलीविजन के माध्यम से ''नारायण सेवा संस्थान'' की जानकारी मिलने पर वे अपने पिता के साथ उदयपुर पहुंचे। यहां उनके पैर की सफल सर्जरी हुई और बाद में विशेष कैलीपर लगाया गया। उपचार के बाद वे आत्मविश्वास के साथ चलने लगे। वर्षों बाद बेटे को अपने पैरों पर चलता देख माता–पिता की आंखें खुशी से छलक उठीं।

हाल ही में कैलीपर बदलवाने आए तोफान ने संस्थान में संचालित निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण में भी प्रवेश लिया। अब वे कंप्यूटर संचालन और उसकी तकनीकी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। उनका सपना है कि प्रशिक्षण पूरा होने के बाद अपने कस्बे में ''ई–मित्र कियोस्क'' शुरू कर माता–पिता का सहारा बनें।

तोफान सिंह की कहानी इस बात का प्रमाण है कि दृढ़ इच्छाशक्ति परिवार का साथ और सही मार्गदर्शन जीवन की हर चुनौती को अवसर में बदल सकता है।

कृत्रिम पांव से मुखर हुई मुकुल की मुस्कान

मुकुल के लिए यह कृत्रिम पांव केवल एक अंग नहीं, बल्कि नई उम्मीद, दृढ़ आत्मविश्वास और जीवन की ओर बढ़ाया गया मजबूत कदम है।

गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) निवासी खड़क सिंह राजपूत मामूली पेंशन और मजदूरी से परिवार का पालन–पोषण करते हैं। पत्नी, दो पुत्र और तीन पुत्रियों के साथ उनका जीवन जैसे–तैसे चल रहा था। तभी पहले छोटे पुत्र का असमय निधन हो गया। परिवार इस दुख से उबर भी नहीं पाया था कि वर्ष 2023 में बड़े बेटे मुकुल के साथ भीषण सड़क हादसा हो गया। 23 वर्षीय मुकुल बाजार से पैदल घर लौट रहा था। सड़क पार करते समय तेज रफ्तार बस ने उसे टक्कर मार दी। गंभीर रूप से घायल मुकुल को अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसकी जान बचाने के लिए घुटने के नीचे से बायां पैर काटना जरूरी बताया। यह सुनकर पूरा परिवार टूट गया। ऑपरेशन के बाद मुकुल का जीवन बैसाखी के सहारे सिमट गया।

कृत्रिम पांव ही उसके लिए नई जिंदगी की उम्मीद था, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण यह सपना अधूरा लग रहा था। लगभग तीन वर्ष बाद सोशल मीडिया के माध्यम से परिवार को नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली। मई 2026 में मुकुल अपने पिता के साथ संस्थान पहुंचे। यहां विशेषज्ञों ने उनके लिए जापान–जर्मन तकनीक से निर्मित कृत्रिम पांव तैयार किया और उसे चलने का प्रशिक्षण दिया। कुछ ही दिनों में मुकुल ने बैसाखी छोड़ दी। आज वह बिना किसी सहारे के आत्मविश्वास से चलते हैं। बेटे को फिर से अपने पैरों पर चलते देख माता–पिता और बहनों की आंखों में खुशी के आंसू छलक उठे। संस्थान ने मुकुल को केवल कृत्रिम पांव ही नहीं दिया, बल्कि आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी दिया। अब वे यहां तीन माह का मोबाइल रिपेयरिंग प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद वे अपने परिवार का आर्थिक सहारा बनेंगे। ▪▪▪

46वां निःशुल्क सामूहिक विवाह

राजधानी में 21 बेटियों का सपना हुआ साकार

जब जीवन की राह में गरीबी, दिव्यांगता और सामाजिक चुनौतियां दीवार बनकर खड़ी हो जाएं, तब किसी का हाथ थामकर सपनों को सच करना किसी वरदान से कम नहीं होता। ऐसे ही 21 दिव्यांग एवं निर्धन जोड़ों के जीवन को खुशियों के नव प्रभात से रूबरू कराने के लिए संस्थान ने दिल्ली में 6-7 जून को 46वां निःशुल्क सामूहिक विवाह समारोह आयोजित कर सात फेरों के साथ 21 निर्धन एवं दिव्यांग जोड़ों के वर्षों के अधूरे सपनों को पूरा किया।

समारोह में राजस्थान, झारखंड, बिहार, गुजरात और उत्तर प्रदेश सहित देश के विभिन्न राज्यों से आए जोड़ों ने वैदिक मंत्रों और अग्नि को साक्षी मानकर जीवनभर साथ निभाने का संकल्प लिया। विवाह मंडप में कहीं माता–पिता की नम आंखें थीं तो कहीं नवदंपतियों के चेहरों पर नए जीवन की चमक। हर फेरे के साथ संघर्ष के बादलों को चीरकर जैसे उम्मीद का सूरज निकल रहा था।

दो दिवसीय आयोजन की शुरुआत गणपति स्थापना, हल्दी और मेहंदी जैसी पारंपरिक रस्मों से हुई। महिलाओं के मंगल गीत, घूमर और लोकनृत्यों ने वातावरण को उत्सवी माहौल और अपनेपन की भावनाओं से सराबोर कर दिया। उपस्थित अतिथियों ने नवदंपतियों को सफल दाम्पत्य जीवन का आशीर्वाद देकर उनके सुखद एवं सम्मानपूर्ण जीवन की कामना की।

उपहार अर्पण – संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी, निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल तथा ट्रस्टी श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने सहयोगी दानदाताओं एवं अतिथियों का पारंपरिक सम्मान किया। नवविवाहित जोड़ों को गृहस्थ जीवन की मजबूत शुरुआत देने के लिए संस्थान ने पलंग, अलमारी, गैस चूल्हा, पंखे, मिक्सर तथा 100 से अधिक प्रकार के घरेलू उपयोग के बर्तन भेंट किए। दिल्ली के अनेक दानदाताओं ने भी आगे बढ़कर उपहार देकर नवदंपतियों की खुशियों में भागीदारी निभाई। संस्थान अब तक 2582 निर्धन एवं दिव्यांग युवक–युवतियों के हाथ पीले कर गृहस्थी बसाने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका है।

हल्दी–मेहंदी के शुभ शगुन – दिल्ली के रोहिणी सेक्टर–12 स्थित गोल्डन स्टार बैंक्वेट में 6 जून को दो दिवसीय निःशुल्क सामूहिक विवाह समारोह का शुभारंभ हुआ। विवाह से पूर्व प्रथम दिवस पारंपरिक रस्मों ने पूरे परिसर को उत्सव और भावनाओं से सराबोर कर दिया। सांयः शुभ मुहूर्त में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच भगवान गणपति की स्थापना की गई। इसके साथ ही हल्दी और मेहंदी की पारम्परिक मंगल रस्मों का निर्वाह हुआ। देश के विभिन्न हिस्सों से आए परिजनों, अतिथियों और संस्थान साधकों ने नवयुगलों को हल्दी और मेहंदी लगाकर उनके सुखद, सफल और समृद्ध दांपत्य जीवन की कामना की। महिलाओं ने पारंपरिक विवाह गीतों की स्वर लहरियों पर घूमर और लोकनृत्य प्रस्तुत कर समारोह में उल्लास का रंग भर दिया। पूरा वातावरण मंगल गीतों, हंसी–खुशी और आत्मीयता से गूंज उठा।

महिला संगीत – महिला संगीत एवं सांस्कृतिक संध्या ने समारोह को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रंगों से सजा दिया।

राधा–कृष्ण रास, रुद्रावतार हनुमान, मां दुर्गा के नवस्वरूप तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम पर आधारित नृत्य–नाटिकाओं ने उपस्थित जनसमूह को भावविभोर कर दिया। देर रात तक चले इस आयोजन में विवाह गीतों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने खुशियों का अनूठा माहौल बनाया।

कन्यादान से बड़ा यदि कोई पुण्य है, तो वह है किसी जीवन को सम्मान और आत्मविश्वास का आशीर्वाद देना। जब समाज किसी जरूरतमंद के हाथों में विश्वास की मेहंदी और सपनों का सेहरा सजाता है, तब मानवता स्वयं मंगलगीत गाती है। –प्रशांत अग्रवाल

वर्षों बाद सपना साकार

राजस्थान के बांसवाड़ा निवासी मुकेश और दुर्गा की कहानी भी संघर्ष और विश्वास की मिसाल है। मुकेश के पिता का निधन हो चुका है और उनकी मां मजदूरी कर परिवार का पालन–पोषण करती हैं। वहीं दुर्गा के पिता मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं। वर्ष 2009 में नारायण सेवा संस्थान में सफल ऑपरेशन के बाद दुर्गा आज एक निजी विद्यालय में शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं।

आर्थिक और पारिवारिक कठिनाइयों के बीच विवाह का सपना दूर होता जा रहा था, लेकिन संस्थान ने उनके जीवन में भी खुशियों का दीप जलाया। विवाह के बाद भावुक दुर्गा ने कहा, 2009 में संस्थान ने मुझे चलने का आत्मविश्वास दिया था और आज जीवनसाथी का साथ भी। मेरे लिए यह केवल विवाह नहीं, बल्कि पुनर्जन्म है।

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह 2026

श्रद्धेय मातृशक्ति एवं पूज्य सज्जनों!
राम-राम.. सादर प्रणाम

सनातन संस्कृति में 16 संस्कारों का अत्यंत पवित्र स्थान है। इन्हीं संस्कारों के माध्यम से मानव जीवन को दिशा, मर्यादा और उद्देश्य प्राप्त होता है। इन संस्कारों में विवाह केवल एक सामाजिक परंपरा नहीं, बल्कि जीवन भर निभाए जाने वाले कर्तव्यों और प्रेम की दिव्य प्रतिज्ञा है।

'विवाह' शब्द स्वयं बताता है - 'वि' अर्थात विशेष और 'वाह' अर्थात वहन करना - यानी जीवन की विशेष जिम्मेदारियों को हृदय से स्वीकार करना। विवाह वह शुभ घड़ी है, जहाँ दो आत्माएँ सात फेरों के साथ सात जन्मों तक साथ निभाने का संकल्प लेती हैं। वैदिक परंपरा में यह रिश्ता केवल बंधन नहीं, बल्कि त्याग, समर्पण और विश्वास की पवित्र डोर है। इसी पावन भावना को साकार करते हुए, **आपका अपना नारायण सेवा संस्थान दिनांक 19-20 सितम्बर 2026 को 47 वां 'दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह'** का आयोजन उदयपुर में करने जा रहा है। जिसमें दिव्यांग एवं निर्धन भाई-बहनों का विवाह वैदिक रीति-रिवाजों से सम्पन्न कराया जाएगा।

इस भव्य आयोजन में गणपति पूजन, हल्दी, मेहंदी, संगीत, बिन्दोली और पवित्र अग्नि के समक्ष सात फेरे जैसी सभी संस्कारिक रस्में पूरी श्रद्धा और गरिमा के साथ संपन्न होंगी। यह केवल विवाह नहीं, बल्कि दिव्यांग बेटियों के सूने आँगन में खुशियों की रोशनी भरने का अवसर है तथा गरीब बेटों के जीवन को सम्मान और संबल देने का माध्यम है। यह समारोह मानव सेवा, संस्कार और परमार्थ का त्रिवेणी संगम है।

आपका छोटा सा योगदान इन जोड़ों के अधूरे सपनों को पूर्ण कर सकता है, उनके जीवन में नई शुरुआत की रोशनी ला सकता है। आइए, इस पुण्य कार्य के साक्षी बनें...आपकी उपस्थिति ही हमारा सबसे बड़ा आशीर्वाद होगा।

निवेदक

कैलाश 'मानव' पद्मश्री अलंकृत
संस्थापक चेयरमैन

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष

आपश्री सादर आमंत्रित हैं

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह 2026

मांगलिक कार्यक्रम

दिनांक: शनिवार, 19 सितम्बर 2026

गणपति स्थापना
प्रात: 10.15 बजे से

हल्दी रस्म
प्रात: 11.00 बजे से

मेहंदी रस्म
प्रात: 11.40 बजे से

कन्या दानी सम्मान
प्रात: 11.50 बजे से

महिला संगीत
सांय: 7.00 बजे से

दिनांक: रविवार, 20 सितम्बर 2026

बिन्दोली
प्रात: 10.00 बजे से

तोरण
प्रात: 11:00 बजे से

वरमाला
दोपहर 12:15 बजे से

पाणिग्रहण संस्कार
दोपहर: 12:45 बजे से

विदाई
दोपहर 1:15 बजे से

बनें सेवा के साक्षी

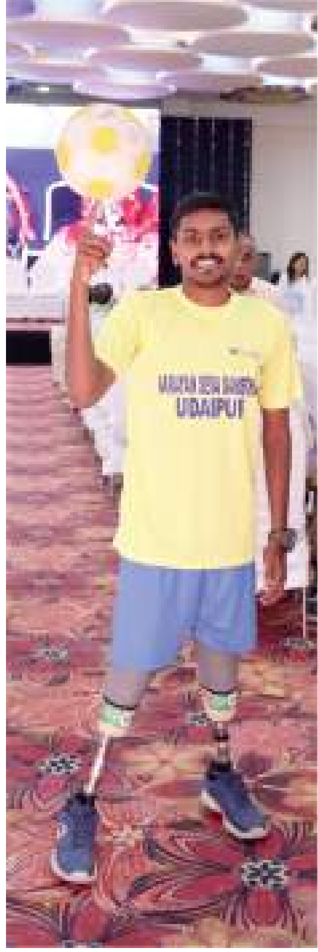

मुंबई में दिव्यांग सहायता शिविर

संस्थान का संकल्प है कि कोई भी दिव्यांगजन स्वयं को अकेला न महसूस करें

मुंबई के दादर –पूर्व स्थित निको हॉल में संस्थान के तत्वावधान में 14 जून को 'निःशुल्क नारायण कृत्रिम अंग एवं कैलीपर्स वितरण शिविर' आयोजित किया गया। जिसमें 127 दिव्यांगजनों को उनकी आवश्यकतानुसार 146 कृत्रिम अंगों (अपर–लिम्ब, लोअर–लिम्ब और मल्टीपल–लिम्ब प्रोस्थेसिस) का निःशुल्क वितरण किया गया। जबकि 39 को सहायक उपकरण प्रदान किए गए।

मुख्य अतिथि महाराष्ट्र के कौशल एवं उद्यमिता विकास मंत्री श्री मंगल प्रभात जी लोढ़ा एवं धर्मपत्नी श्रीमती मंजू जी लोढ़ा रहीं। विशिष्ट अतिथियों के रूप में शिविर सौजन्यकर्ता श्री राधा कृष्ण चैरिटेबल फाउंडेशन (यूएसए), की अध्यक्ष श्रीमती जयश्री बेन अनिल बथिया, समाजसेवी श्रीमती नीति गोयल, संरक्षक श्री सत्य भूषण जैन, मुंबई शाखा अध्यक्ष श्री महेश अग्रवाल, अग्रवाल सम्मलेन के अध्यक्ष श्री शिवकांत खेतान, टाटा बिजनेस के वाइस प्रेसीडेंट श्री कपिल देव अय्यर, रोटरी क्लब के पूर्व गवर्नर डॉ. राजेंद्र अग्रवाल, समाजसेवी श्री प्रेमसागर गुप्ता, डॉ. श्याम सिंघानिया, श्री जगदीश गुप्ता व श्री प्रवीण भाई पटेल मंचासीन रहे। संस्थान ट्रस्टी–निदेशक श्री देवेन्द्र चौबीसा ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान करते हुए बताया कि शिविर का मुख्य उद्देश्य दिव्यांगजनों को निःशुल्क स्क्रीनिंग, आकलन और कृत्रिम अंगों की आवश्यकताओं की पहचान के माध्यम से व्यापक पुनर्वास सहायता प्रदान करना है। लाभार्थियों के लिए जापानी और जर्मन तकनीक से विकसित अत्याधुनिक 3डी प्रिंटिंग प्रोस्थेटिक समाधानों का उपयोग किया गया है, जो पहनने में आरामदायक और सटीक फिटिंग सुनिश्चित करते हैं। मुख्य अतिथि श्री लोढ़ा ने संस्थान के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि दिव्यांग 'लाभार्थियों को आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाते देखना प्रेरणा देता है कि इस दिशा में हम अपने प्रयासों का विस्तार करें और अधिक से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों तक पहुँचें। संस्थान प्रेरणादायी कार्यकर रहा है, शिविर का संचालन महिम जैन ने तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री रविश कावड़िया ने किया।

रूखमिन को मिला भरोसे का कल

उत्तर प्रदेश के कौशांबी जिले के फरीदपुर की रहने वाली रूखमिन जन्मजात दोनों टखनों की विकृति के कारण बचपन से ही चलने–फिरने में असमर्थ थीं। उनके माता–पिता भी दिव्यांग हैं और मजदूरी कर परिवार का पालन–पोषण करते रहे। आर्थिक तंगी के कारण रूखमिन का उपचार कभी नहीं हो सका। चार बड़ी बहनों के सहयोग से उन्होंने पढ़ाई जारी रखी और वर्तमान में 12वीं की छात्रा हैं। रूखमिन के बहनोई ज्ञान बाबू ने एक टीवी कार्यक्रम के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान की निःशुल्क चिकित्सा एवं पुनर्वास सेवाओं की जानकारी प्राप्त की। इसके बाद 15 सितम्बर 2025 को वे रूखमिन को संस्थान लेकर आए। विस्तृत जांच के बाद 30 सितम्बर को उनकी सफल सर्जरी की गई, जिससे पैरों की विकृति दूर हुई। नौ माह बाद संस्थान में उनके लिए विशेष कैलीपर्स तैयार किए गए। अब वे न केवल सहजता से चल–फिर सकती हैं, बल्कि अपने दैनिक कार्य भी स्वयं करने लगी हैं।

संस्थान में पुनर्वास के साथ रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण की व्यवस्था देखकर रूखमिन ने सिलाई प्रशिक्षण में प्रवेश लिया। कुछ ही समय में उन्होंने सिलाई का अच्छा कौशल सीख लिया। उनका विश्वास है कि प्रशिक्षण पूरा होने के बाद वे घर से ही सिलाई कार्य कर आत्मनिर्भर बनेंगी और अपने वृद्ध माता–पिता की सेवा में भी सहयोग देंगी।

आत्मबल से सफलता की ओर : भैया जी

सेवा, संवेदनशीलता और सकारात्मक सोच से ही समाज और स्वयं का विकास सम्भव है।

मानव सेवा ही,माधव सेवा।

नारायण सेवा संस्थान में प्रतिमाह आयोजित होने वाला 'अपनों से अपनी बात' कार्यक्रम देशभर से कृत्रिम अंग, कैलीपर, निःशुल्क सर्जरी एवं रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण के लिए आए दिव्यांगजनों और उनके परिजनों को प्रेरित करने का सशक्त मंच बन रहा है। जून माह में यह कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित हुआ, जिसका प्रसारण संस्कार और आस्था चैनल पर भी हुआ। संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने कहा कि समय का सदुपयोग, आत्मविश्वास और आत्मबल ही सफलता एवं आत्मनिर्भरता की कुंजी हैं। उन्होंने भक्त ध्रुव, विदुर,

द्रौपदी, शबरी, जटायु और सुदामा के जीवन प्रसंगों के माध्यम से बताया कि कठिन परिस्थितियां व्यक्ति को मजबूत बनाती हैं और जीवन की चुनौतियां ही सफलता के नए अवसर लेकर आती हैं। संवाद के दौरान मध्यप्रदेश के तोफान सिंह ने कंप्यूटर प्रशिक्षण से आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा साझा की, जबकि उत्तर प्रदेश के सदानंद, जुनैद, राजस्थान के भानु प्रताप तथा छत्तीसगढ़ के देवेन्द्र नाथ ने कृत्रिम अंग, सफल सर्जरी और संस्थान की सेवाओं से मिले नए जीवन के अनुभव बताए। दूसरे चरण में निर्जला एकादशी श्रद्धा, सेवा और अध्यात्म के साथ मनाई गई। इस अवसर पर दिव्यांगजनों एवं उनके परिजनों के लिए फलाहार और विशेष भोजन की व्यवस्था की गई। सेवक प्रशांत भैया ने कहा कि उपवास का वास्तविक अर्थ भगवान के निकट रहकर मन की तृष्णाओं पर नियंत्रण प्राप्त करना है। उन्होंने कहा कि जैसे सोना अग्नि में तपकर निखरता है, वैसे ही संघर्ष मनुष्य को सफल और सशक्त बनाते हैं। कार्यक्रम के दौरान जरूरतमंदों को फल, वस्त्र, छाते, जल कलश एवं अन्य उपयोगी सामग्री भी वितरित की गई।

गुरू की कृपा से होता है सत्यता व आनंद का बोध

विद्या दान और सन्मार्ग को प्रशस्त करने वाले गुरू का स्थान सर्वोच्च माना जाता है। गुरू के प्रति श्रद्धा प्रकट करना और उनकी पूजा करना ही गुरुपूर्णिमा पर्व की विशेषता है। इस पर्व पर महाभारत सहित अन्य महान् ग्रंथों के रचयिता महर्षि वेदव्यास का भी पूजन होता है। यह उनका प्राकट्योदिवस भी है। इस दिन अपने गुरू की चरण–रज शिरोघार्य करने से जीवन में आगे का मार्ग प्रशस्त होता है।

गुरू एक नाम और रूप नहीं बल्कि वह तत्व है जो हमें सत्यता व नित्यता का बोध प्रदान करता है। जिस तरह सोना विभिन्न आभूषणों में ढल कर भी सोना ही रहता है, घड़ा, सुराही, खिलौना आदि रूपों में आकार लेकर माटी अन्ततः माटी ही रहती है, इसी तरह हम सभी अनेक नाम और रूप के होने पर भी एक ही शक्ति और सत्ता के स्वरूप हैं। आकार से हम भले ही विभिन्न दिखाई देते हों पर सब के अन्दर एक ही सत्ता है, इसका ज्ञान हमें गुरू से ही प्राप्त होता है।

सद्‌गुरू से बड़ा दूसरा कोई सच्चा मित्र हो ही नहीं सकता। राम ने ऋषि वशिष्ट के रूप में, श्री कृष्ण ने ऋषि सांदीपनी के रूप में, शंकराचार्य ने गोविंदनन्द के रूप में, चैतन्य महाप्रभु ने ईश्वरपुरी और स्वामी विवेकानंद ने श्री रामकृष्ण परमहंस के रूप में ऐसे ही सदगुरू का वरण किया था। सच्चा गुरू अपनी ऊर्जा, योग्यता, उदात्तता को शिष्यों की अन्तर्मात्मा में भी जाग्रत कर देता है।

समुद्र में सीपी स्वाति नक्षत्र की वर्षा की एक बूंद के लिए सदा अपना मुंह बादलों की ओर उठाए रहती है। जैसे ही स्वाति नक्षत्र में वर्षा की बूंद उसके मुंह में पड़ती है, वह मुंह बंद कर समुद्र की गहरी सतह में चली जाती है, कुछ ही दिनों में वह बूंद उसके शरीर में मोती का रूप ले लेती है। इसी तरह जीवन की सार्थकता का ज्ञान भटकते साधक को सद्‌गुरू के सानिध्य में की गई साधना से प्राप्त होता है। इसे जीवन की सिद्धि कहा जा सकता है।

सद्‌गुरू तो हमें वेद के उस महावाक्य का भी आभास करवा देता है, जो कहता है कि 'तत् त्वम् असी' वह तुम ही हो। जो कभी जल, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी अलग–अलग रूपों में दिखता हो, पर तत्व तुम सबमें एक है और वह है – चैतन्य। जो सनातन है, नित्य और शाश्वत है। ज्ञान से सत्यता कभी अलग नहीं होती। अज्ञान में ही जगत अलग दिखता है। इसी अज्ञानता के अंधकार को गुरू दूर करता है। गुरू के निकट बैठने से ही जीवन के सारे संशय मिट जाते हैं। वे ही अनित्य से हमारा मोह भंग कर वास्ताविकता से तादात्म्य स्थापित करवा देते हैं।

नारायण सेवा संस्थान में 29 जुलाई को गुरूपूर्णिमा पर्व श्रद्धा, भक्ति और उल्लास से मनाया जाएगा। नर सेवा को नारायण सेवा मानकर दिव्यांग एवं निराश्रितजन की निःशुल्क शिक्षा, चिकित्सा, प्रशिक्षिण एवं पुनर्वास हेतु स्थापित संस्थान की सेवामूर्ति परमपूज्य गुरूदेव पद्मश्री अलकृंत श्री कैलाश जी 'मानव' का समारोह पूर्वक वंदन–अभिनंदन होगा। आपश्री सादर आंमत्रित हैं।

नेचुरोपैथी

पाचन तंत्र में सुधार दूर हुई शरीर में जकड़न

मुंबई निवासी श्रीमती परवरिश नरेंद्र सरवैया संस्थान के नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय में संतुलित आहार और स्वस्थ जीवनशैली को अपनाकर स्वास्थ्य में आए उल्लेखनीय सुधार से अत्यधिक प्रसन्न और उत्साहित हैं। यहां के उपचार ने उन्हें न केवल बेहतर स्वास्थ्य दिया बल्कि नई ऊर्जा, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच भी प्रदान किया।

परवरिश जी पिछले दिनों अपनी माता जी के साथ संस्थान के लियों का गुड़ा स्थित प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र पहुंचीं। नेचुरोपैथी से उपचार उनका पहला अनुभव था। जब वे यहां आईं तब उनका ब्लड शुगर स्तर लगभग 550 तक था। साथ ही हाथ–पैरों में दर्द, घुटनों की तकलीफ और शरीर में जकड़न जैसी समस्याएं भी उन्हें लगातार परेशान कर रही थीं।

संस्थान में 10 दिनों तक चले प्राकृतिक चिकित्सा उपचार के दौरान उन्हें हाइड्रोथेरेपी, चिकित्सीय मसाज, एनिमा, मिट्टी पट्टी तथा विभिन्न प्राकृतिक उपचार प्रदान किए गए। उपचार के साथ–साथ उन्हें संतुलित एवं स्वास्थ्यवर्धक आहार दिया गया। जिससे उनके शरीर को आवश्यक पोषण मिला और स्वास्थ्य सुधार की प्रक्रिया को गति मिली। आक (आकड़ा) के पत्तों से किए गए विशेष उपचार से भी उन्हें काफी लाभ हुआ। सभी प्राकृतिक उपायों एवं संतुलित आहार से उनके पाचन तंत्र में सुधार हुआ तथा शरीर की जकड़न और हाथ–पांव के दर्द में काफी राहत मिली।

परवरिश जी बताती हैं कि उपचार के बाद उनका ब्लड शुगर स्तर पहले की तुलना में काफी नियंत्रित हुआ है और हाथ-पैरों तथा घुटनों के दर्द में भी उल्लेखनीय आराम मिला है। प्राकृतिक चिकित्सा और संतुलित आहार ने उन्हें स्वस्थ जीवन का नया मार्ग दिखाया है।

वे संस्थान के डॉक्टरों, चिकित्सकों और स्टाफ की सराहना करते हुए कहती हैं कि यहां सभी मरीजों की अत्यंत आत्मीयता और समर्पण के साथ देखभाल की जाती है। संस्थान को मिलने वाले दान का उपयोग दिव्यांग बच्चों के ऑपरेशन, शिक्षा, चिकित्सा एवं पुनर्वास जैसे सेवा कार्यों में अत्यंत प्रभावी ढंग से किया जा रहा है।

जिला कलेक्टर ने देखी नारायण सेवा

उदयपुर के नवनियुक्त जिला कलेक्टर श्री गौरव अग्रवाल ने गत दिनों नारायण सेवा संस्थान के लियों का गुड़ा स्थित सेवा महातीर्थ का अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने जापानी एवं जर्मन तकनीक से निर्मित 3डी प्रिंटेड नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिंब फिटमेंट शिविर का उद्‌घाटन किया तथा देश के विभिन्न राज्यों से कृत्रिम हाथ–पांव, कैलीपर एवं निःशुल्क सर्जरी हेतु आए दिव्यांगजन एवं उनके परिजनों से मुलाकात की।

उन्होंने संस्थान द्वारा संचालित निःशुल्क सिलाई, कंप्यूटर, मोबाइल रिपेयरिंग, हस्तशिल्प आदि प्रशिक्षण केंद्रों का अवलोकन किया तथा प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे दिव्यांग युवाओं से संवाद किया। उन्होंने प्रशिक्षकों से प्रशिक्षण की गुणवत्ता एवं प्रगति की जानकारी भी ली।

संस्थान की सेवाओं की सराहना करते हुए जिला कलेक्टर ने कहा निराश्रितजनों के लिए इस प्रकार की समर्पित सेवा कहीं नहीं देखी। मुझे नहीं लगता कि देश में अन्यत्र कहीं दिव्यांगों की चिकित्सा, शिक्षा, प्रशिक्षण और पुनर्वास का कार्य इस स्तर पर निःशुल्क किया जाता होगा।

संस्थान संस्थापक पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव', अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया तथा निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने जिला कलेक्टर का स्वागत करते हुए संस्थान की 40 वर्षों की सेवा यात्रा से अवगत कराया।

सेवक प्रशांत भैया ने बताया कि संस्थान अब तक 4.52 लाख से अधिक दिव्यांगजनों की निःशुल्क सर्जरी, 40 हजार से अधिक दुर्घटनाग्रस्त दिव्यांगों को निःशुल्क कृत्रिम हाथ–पांव, तथा 2,500 से अधिक दिव्यांग एवं निर्धन जोड़ों का सामूहिक विवाह संपन्न करा चुका है। इसके अतिरिक्त नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के 783 बच्चों को निःशुल्क अंग्रेजी माध्यम शिक्षा प्रदान की जा रही है।

जिला कलेक्टर ने कहा कि वे प्रशासनिक सेवा के प्रोबेशनरी अधिकारियों को भी संस्थान के भ्रमण के लिए भेजेंगे, ताकि वे सेवा और संवेदना को प्रत्यक्ष रूप से आत्मसात कर अपने प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन अधिक मानवीय दृष्टिकोण के साथ कर सकें।

नि:स्वार्थ सेवा का नयनाभिराम संसार

श्री गौरव अग्रवाल IAS
जिला कलेक्टर, उदयपुर

Amazing work. Its always like God himself has chosen them to do his noble work for humanity.
Best wishes
Gaurav

श्री जेके रांका सा.
राष्ट्रीय अध्यक्ष एसोशियन ऑफ रिटायर्ड जजेज एवं
पूर्व न्यायधीश राज. हाई कोर्ट

Happy & delighted to be here in this unique sansthan Doing extremely wonderful work in far not so fortunate ones and angel to feel good work under one roof
God bless you
Jitendra

Sakshi Goyal
VP - Culture, Talent & Engagement

Partnering with Narayan Seva Sansthan has been one of the most meaningful expressions of Credit Saison India's CSR commitment to Empowering Futures and Enriching Lives. Our visit to their Udaipur facility in April 2026 gave us a first-hand view of the extraordinary impact they create from life-changing corrective surgeries to specialised artificial limbs that restore dignity and independence to persons with disabilities. Through our CSR support in FY 25-26, we contributed towards limbs and corrective surgeries for 100 patients each, helping them regain mobility and lead independent lives.

It is truly inspiring to see an organisation that combines operational excellence with genuine empathy & we are honoured to support this mission together.

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,
मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
C/å नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा–311001

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला, मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल, 35 लादिया, बाग अलवर

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
5–C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811,
ए. 14, 'गिरधर–धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.–09113733141
ब्व पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग

रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़

धनबाद
श्री गोपाल कुमार खेडिया,
मो. 09608529923,
आजाद नगर भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233,
मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,
मो. 09926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जिला – जबलपुर

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136
ए–3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड़ जिला – भोपाल

बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,
मो. 08989609714, बखतगढ़, त.–बदनावर, जि.–धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी,
मो. 09422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला

परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा
मो. 09422876343

नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,
मो. 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला – नांदेड़

पाचोरा
श्री सीताराम जी
मो. 09422775375

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी
मो. 028847991, 9029643708,
10–बीथ्बी, वाईसराय पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली, मुम्बई

भायंदर
श्री कमलचंद लोढा,
मो. 8080083655 ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़ बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे–401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट–बिघरी, त. बदसर जिला हमीरपुर – 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट–रोपा, जिला–हमीरपुर–177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807
गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

....
श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
3 68–ए, नई अनाज मंडी, कैथल

जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
108 अनाज मण्डी, जुलाना, जींद

पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर–14, पलवल

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद डेयरी मेन रोड करण विहार नियर मेरठ रोड करनाल 132001

अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.– 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट–133001

नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014 165–हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,
मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा–403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,
मो. 09274595349
म.नं.रू बी–77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074
विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला–बरेली
श्री विजय नारायण शुक्ला मो. 7060909449,
मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरेली

हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,
मो.–09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन, सादाबाद

हापुड़
श्री मनोज कंसल
मो.–09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस, कबाड़ी बाजार, हापुड़

गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा मो.–08791269705 बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा–244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801

....
श्री देवनाथ साहू
मो. 09229429407
गांव– बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला–कोरबा

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000
रामदेव चौक बालोद जिला–बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52–सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु–180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा
मो. 08447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो.0 9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स प्ट्ध1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई
मो. 09529920090,07073452174
09529920088
शिवे सृष्टि सीएचएस लिमिटेड, बिल्डिंग नं. 4–बी, फ्लैट नंबर 608, बॉम्बे डाईंग महादा बोइवाड़ा, नयागांव, दादर (पूर्व) मुंबई (महाराष्ट्र) पिनकोड 400014

पूणे
मो. 09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे–16

दिल्ली

रोहिणी
मो. 08588835718
08588835719, बी–4/67, सेक्टर–8, रोहिणी, दिल्ली, पिन कोड 110085

जनकपुरी, नई दिल्ली
07023101167, 07412060406
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058

विकासपुरी, नई दिल्ली
मो. 09257017592
मकान नं. 342 ब्लॉक–सी, मद्रासी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

वेस्ट बंगाल

कोलकाता
09529920097, मकान नंबर–580, स्वामी सारणी ग्वाला, बागान, कालांदी, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) पिनकोड 700048

हरियाणा

गुरूग्राम
मो. 08306004802,
हाउस नं.–1936 जीए, गली नं.–10, राजीव नगर ईस्ट, माता रोड़, सी. आर.पी.एफ. कैम्प चौक, गुरुग्राम – 122001

हिसार
मो. 9257017593, मकान न. 2249, सेक्टर–14, हिसार 125005

रेवाड़ी
मो. 9257017594, C/o श्री ललित कुमार, गली नंबर 7, दूसरी मंजिल, विकास नगर, बुद्धपुर रोड, कुतुबपुर मोला, रेवाड़ी (हरियाणा) 123401

फरीदाबाद
मो. 7023101162, ई–10, नेहरू ग्राऊंड, बीकानेर स्वीट्स के पीछे, ऐन.आई.टी. फरीदाबाद पिनकोड 121001

पंजाब

लुधियाना
मो. 07023101153
311/312, बी–17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़
मो. 07073452176
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर – 46–सी, चंडीगढ़–160047

उत्तर प्रदेश

मेरठ
मो. 09257110802
38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड, नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम, मेरठ

लखनऊ
मो. 09351230395
फ्लेट नम्बर 202, गुरुकृपा अपार्टमेंट न्यू श्रीनगर आलमबाग लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

राजस्थान

जोधपुर
मो. 08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा
मो. 07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं. 2–वी–5 तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

अजमेर
नारायण सेवा संस्थान C/O श्रीमती. कैलाश उपाध्याय पत्नी स्वर्गीय श्री विश्वप्रकाश उपाध्याय मकान नं. 68, माली मोहल्ला, आनासागर लिंक रोड, शिव मार्ग, कृष्णा गंज, अजमेर (राजस्थान) 305001
मो. नं. 9216022978

बिहार

पटना
मो. 09257110805, मकान नं.–23, किताब भवन रोड नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना–13

गुजरात

सूरत
मो. 09529920082
27, सम्राट टाऊनशिप, सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा
मो. 09529920081
मकान नंबर ए–2/5, सिद्धार्थ पार्क, साईदीप नगर के पास, टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स के सामने, न्यू वीआईपी रोड, बड़ौदा (गुजरात), पिनकोड 390022

अहमदाबाद
मो. 09529920080, 08306008208
07/ए, कपिलकुंज सोसायटी, विजय नगर के सामने, मेट्रो स्टेशन, नारायणपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) पिनकोड 380013

(कर्नाटक)

बेंगलुरू
मो. 09341200200, नारायण सेवा संस्थान 40 (12) प्रथम फ्लोर, मॉडल हाउस कॉलोनी, अपोजिट समना पार्क, एनआर कॉलोनी, बसवानगुड़ी, बेंगलुरु–560004

मध्य प्रदेश

ग्वालियर
मो. 9216022976,मकान नंबर 197, कुंडी रोड, गली नंबर 05, कोटेश्वर कॉलोनी, कोटेश्वर मंदिर के सामने, गिर्द, ग्वालियर (म.प्र.) 474003

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस
मो. 07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा
मो. 07023101163
मकान नं. 212ए53, राधानगर, भारत पेट्रोलियम अधिकारी आवास बिल्डिग, मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़
मो. 07023101169
एम.आई.जी. –48 विकास नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़

तेलंगाना

हैदराबाद
मो. 09573938038
लीलावती भवन, 4–7–122/123 इसामिया बाजार, कोठी, संतोषी माता मंदिर के पास, हैदराबाद –500027

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद
मो. 07073474435
श्रीमती शीला जैन निःशुल्क फिजियोथेरपी सेंटर, बी.–350 न्यू पंचवटी कॉलोनी, गाजियाबाद – 201009

लोनी
मो. 9257110802
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला, चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा
मो. 07023101174
मकान नंबर ई–52, किडजी स्कूल के पास, कमला नगर, आगरा (उत्तर प्रदेश) पिन कोड रू 282005

छत्तीसगढ़

रायपुर
मो. 07869916950, 08306004806
मीरा जी राव, म.नं.–29/500 टीवी टावर रोड, गली नं.–2, फेस–2 श्रीरामनगर, पो.–शंकरनगर,रायपुर

गुजरात

राजकोट
मो. 09529920083
बी–33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिर्वसिटी रोड, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून
मो. 07023101175
साई लोक कॉलोनी, गांव कार्बरी ग्रांट, शिमला बाय पास रोड, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी
मो. 08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी, दिल्ली–6

शाहदरा
मो. 07073474435, बी–85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

हरियाणा

अम्बाला
मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर–7 अम्बाला

कैथल
मो. 08696002432
फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड़, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर
मो. 09928027946, 09257110807
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिचर्स सेन्टर बी–50–51 सनराईज सिटी, मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

मध्य प्रदेश

इन्दौर
मो. 09529920087
43, चन्द्रलोक कॉलोनी खजराना रोड, इंदौर–452018

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,000 रू.	50,000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन-नाश्ता सहयोग मित्ति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि			
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	2,25,000 रू.

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI

Google Pay PhonePe Paytm

narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

बच्चों का भविष्य संवार रही

नारायण चिल्ड्रन अकादमी

संस्थान का उद्देश्य गरीब बच्चों को शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर और सम्मानपूर्ण जीवन देना है। आपका छोटा-सा सहयोग उनका भविष्य संवार सकता है।

दिव्यांग एवं निर्धन कन्याओं के बनें धर्म माता-पिता

कन्यादान (एक दिव्यांग कन्या)
₹1,00,000

गृहस्थी उपहार सहयोग (प्रति जोड़ा)
₹ 51,000

पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)
₹ 21,000

श्रृंगार सहयोग (प्रति जोड़ा)
₹11,000

मेहंदी और हल्दी रस्म (प्रति जोड़ा)
₹ 5,100

Donate via UPI

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह–उदयपुर

दिनांक: 19-20 सितम्बर 2026

आपश्री सपरिवार सादर आमंत्रित है।

सेवा–पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 जुलाई, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538, स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली–110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित। मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये